6th semester Hons.

सरहद के उस पार–फणीश्वरनाथ रेणु

फणीश्वरनाथ रेणु : एक परिचय

जन्म–4 मार्च सन् 1921, मृत्यु–11 अप्रैल सन् 1977 ,जन्म –स्थान–अररिया जिला में फारबिसगंज के पास औराही हिंगना गाँव। शिक्षा–भारत और नेपाल में। मैटिक –विराटनगर आदर्श विद्यालय, इन्टर–काशी हिन्दू विश्व विद्यालय सन् 1942। पत्नियाँ– रेखा (से बेटी–कविता) ,पद्मा (से पुत्र– पराग, दक्षिणेश्वर) ,लतिका। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन और संपूर्ण क्रांति में भाग लिया। उन्होंने नेपाली क्रांतिकारी आन्दोलन में सन् 1950 में भाग लिया।

रिपोर्ताज–संग्रह– ऋणजल–धनजल, नेपाली क्रांतिकथा, वनतुलसी की गंध, श्रुत अश्रुत पूर्वे।

पुरस्कार/सम्मान– पद्मश्री (1970ई.), उन्होंने आपातकाल के विरोध में इसे लौटाया।

सरहद के उस पार–

1. पूँजीपतियों और राणाओं द्वारा नेपाली जनता का शोषण।

2. पूँजीपतियों द्वारा नेपाल में मिलों की स्थापना।

3. कैपिटलिस्टों द्वारा मजदूरों के लिए स्कूल, अस्पताल की व्यवस्था न कर मिलों के पास वेश्यालय और शराब की दुकान खोलना।

4. मजदूरों के बच्चों और औरतों का दयनीय जीवन।

5. कृष्ण प्रसाद कोइराला के परिवार का शोषित जनता के पक्ष में खड़ा होना।

6. नेपाली लेखको द्वारा यथार्थ रचनाओं का सृजन और संघर्षशील नेपाली जनता का समर्थन करना।

7. रेणु का नेपाल के क्रांतिकारी आन्दोलन में शामिल होना ।

लघु प्रश्न–

1. रेणु ने किस नगर को मिलों का नगर कहा है?

2. 2. बी0एव रेलवे कटिहार–जोगबनी ब्रांच लाइन का अंतिम स्टेशन कौन–सा है?'

3. सोशलिस्टों ने नेपाल को कब अपना अड्डा बनाया?

4. रेणु ने मजदूरों की कॉलनी को क्या कहा है?

5. नेपाल में कौन–सी फैक्टरियाँ खुलती हैं?

6. नेपाल के 'पिताजी' किनको कहा जाता है?

7. रेणु ने किन दो बापुओं का उल्लेख किया है? वे किनके द्वारा और कहाँ नजरबंद किये गये?

8. किस वर्ष दो बापू नजरबंद किये गये?

9. 'सुन्दरी बल' झील पर कितनी रचनायें लिखी गई हैं?

10. 'सरहद के उस पार' रिपोर्ताज किस पत्रिका में और किस वर्ष प्रकाशित हुई?

11. 'जनता के संपादक कौन थे?–रामवृक्ष बेनीपुरी

12. रेणु ने कितना रिपोर्ताज लिखा?

13. रेणु के चार रिपोर्ताज का नाम लिखें।–हड्डियों का पुल, विदापत नाच, नये सवेरे की आशा, भूमि दर्शन की भूमिका।

14. रेणु की पत्नियों के नाम लिखें।

15. 'किन्तु देश के नेताओं की निगाह पर तो जैसे पट्टियाँ बधी हैं, मुँह पर ताले पड़े हैं। –लेखक किस देश की ओर संकेत करता है?

16. किन्तु उपरोक्त''कैपिटलिस्टों'' की निगाह बहुत दिनों से इस पवित्र मिट्टी की ओर लगी हुई है–यहाँ किन कैपिटलिस्टों की ओर संकेत किया गया है?

17. 'सरहद के उस पार' रचना का संबंध किस विधा से है?–रिपोर्ताज

18.अस्पतालों और स्कूलों की जरूरत जब यहाँ की सरकार ही अपनी प्रजा के लिए नहीं महसूस करती है, तो इन 'राक्षसों' से क्या आशा की जाय।– इस पंक्ति में किन राक्षसों की ओर संकेत किया गया है?

सप्रसंग व्याख्या करें

1. जिस राज्य में 'घूस' को' राजधर्म' मान लिया गया हो , वहाँ यदि इस आशय के अफवाह फैल चुके हों कि नेपाल सरकार ने बेनीपुरीजी को घूस में बहुत बड़ी रकम आफर की थी, किन्तु उसे अस्वीकार कर, वे 'जनता' में नेपाल की चिट्ठियाँ प्रकाशित करते रहे तो 'बेनीपुरी' वहाँ के हाकिमों के लिए वास्तव में दूसरी दुनिया के जीव होंगे।

2. यहाँ के मुट्ठी–भर राजघरानों और शासक वर्गों की कदमपोशी तथा पाकेट–पूजा करके करोडों अशिक्षित, भूखी, दरिद्र और अबोध जनता को लूटने का षड़यंत्र ! न इनकम टैक्स का बखेड़ा, न ट्रेड यूनियन कानूनों की पाबंदी अरैर सबसे बड़ी खुशी की बात कि मजदूर यूनियनों के भूतों का यहाँ जरा भी डर नहीं।

3. अस्पतालों और स्कूलों की जरूरत जब यहाँ की सरकार ही अपनी प्रजा के लिए नहीं महसूस करती है, तो इन 'राक्षसों' से क्या आशा की जाय?

4. दिन–प्रतिदिन नेपाली प्रजा की जिंदगी बदतर होती जा रही है। इस पर तुर्रा यह कि अभी और भी कितने विषधर अपने–अपने दातों को तेज कर रहे हैं, नेपाल की सड़को पर चक्कर काट रहे हैं।

5. मैं कहता हूँ, सुनिए–बहुत शीघ्र ही यहाँ जबरदस्त क्रांति होगी और सफल क्रांति होगी। निरंकुश नेपाली शासकों के साथ–साथ इन पूँजिपतियों के गठबंधन ने कोढ़ में खाज का काम किया है। नेपाल के चैतन्य समाज की आँखें खुल चुकी हैं

6. 'किन्तु देश के नेताओं की निगाह पर तो जैसे पट्टियाँ बधी हैं, मुँह पर ताले पड़े हैं। उन्हें दुनिया भर के लिए दर्द है पर नेपाल की शोषित जनता के लिए उनके मुँह

से एक शब्द भी नहीं निकलता।

7. किन्तु यहाँ के ठेकेदारों और शासक–वर्ग के गड़बड़ घोटालों को आप नहीं समझ सकेंगे।

8. इन सड़को की तरह ही इनकी भी जीवन कहानी है।

9. अब तक सभी लड़ाइयों में , इस कौम ने बिना समझे–बूझे भाग लिया है, अब आप इन्हे अपनी लड़ाई का मकसद समझा दें।